शोध प्रतिवेदन

"माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं समायोजन का अध्ययन।"

निर्देशक
श्री मनीष सैनी
(व्याख्याता)

प्रस्तुतकर्त्री
मिनाक्षी शुक्ला
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

1 प्रस्तावना :–

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। अपनी क्रियाओं द्वारा नवीन ज्ञान प्राप्त करना ही उसका उद्देश्य होता है। उसका ज्ञान उचित है या नहीं इसके लिए अपने प्रयासों से छानबीन, खोज एवं शोधकार्य करके अपने ज्ञान की पुष्टि करता है। प्रत्येक शोध कार्य का कुछ न कुछ उद्देश्य होता है। इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं समायोजन के स्तर को जानना है।

वैश्विक स्तर पर देखा जाये तो प्रत्येक 20वाँ व्यक्ति किसी न किसी दिव्यांगता से ग्रस्त है। भारत में दिव्यांगता की समस्या न सिर्फ अधिक है, बल्कि धीरे–धीरे बढ़ भी रही है। वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़ों से पता चलता है कि भारत में दिव्यांगों की कुल जनसंख्या वर्ष 2001 के 21.9 मिलियन से बढ़कर वर्ष 2011 में 26.8 मिलियन हो गई है। दिव्यांग जनसंख्या में बढ़ोत्तरी होने के साथ शिक्षा शास्त्रियों के मानस पटल पर दिव्यांगों के शिक्षण अधिगम की जटिल समस्या भी बनी हुई है। यद्यपि भारत का संविधान अपने सभी नागरिकों के लिए समानता, स्वतन्त्रता, न्याय व गरिमा सुनिश्चित करता है। और स्पष्ट रूप से यह दिव्यांग

व्यक्तियों समेत एक संयुक्त समाज बनाने पर जोर डालता है। हाल के वर्षों में दिव्यांगों के प्रति समाज का नजरिया तेजी से बदला है, यह माना जाता है कि दिव्यांग बालक भी देश के लिए मूल्यवान मानव संसाधन होते है। यदि इन्हें समान अवसर, इनके अधिकारों की सुरक्षा तथा समाज में पूर्ण भागीदारी के अवसर मिलें तो निश्चित ही गुणवत्तापूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते है।

आधुनिक युग प्रतियोगिता का युग है तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिव्यांग बालकों को भी उच्च उपलब्धियों की आवश्यकता है। इन उपलब्लिधयों के लिए दिव्यांग बालकों को उचित मार्गदर्शन व प्रोत्साहन की आवश्यकता है, ताकि दिव्यांग बालक भी सामान्य बालकों की तरह राष्ट्र की उन्नति का कर्णधार बने, साथ ही स्वजीवन को सफल बनाए। इस हेतु दिव्यांग बालकों में श्रेष्ठ अध्ययन आदतें जैसे– कक्षा शिक्षण से पूर्व अध्ययन करना, विद्यालय में नियमितता, गृहकार्य, स्वमूल्यांकन व स्वाध्याय करना आदि का विकास, आत्मचेतना, समन्वय, समायोजन, सामाजिक दृढ़ता व इच्छाशक्ति आदि का निर्माण आवश्यक है।

यद्यपि दिव्यांग विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ भी सामान्य विद्यार्थियों के समान ही होती है, किन्तु उन्हें संतुष्ट करने के उपाय सीमित होते है, उन्हें अधिक बाधाएँ सहन करनी पड़ती है। जिससे उनके समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक विसंगतियाँ दृष्टिगत होती है। समुचित विकास न होने के कारण दिव्यांग बालकों को समाज व व्यक्तियों के साथ समायोजन स्थापित करने में कठिनाई महसूस होती है।

एक सामान्य विद्यार्थी जहाँ प्रायः स्वयं को सक्षम व योग्य पाता है, आत्मविश्वास से परिपूर्ण होता है, वही एक दिव्यांग विद्यार्थी के लिए स्वयं को मूल्यहीन, दीन–हीन मानना अति सहज है। कारण वह इन गुणों से वंचित है।

जब कोई विद्यार्थी स्वयं को हीन समझने लगता है, नकारात्मक भावना रखता है तो यह उसे वातावरण के साथ परस्पर समायोजित होने में कठिनाई महसूस करता है। साथ ही वातावरण में उपस्थिति विभिन्नताओं के कारण दिव्यांग विद्यार्थी की अभिवृत्ति में विरोध उत्पन्न होने लगता है। शिक्षा के समुचित प्रबंधन द्वारा सही दिशा निर्देश देकर विसंगतियों को दूर किया जा सकता है। उनमें श्रेष्ठ अध्ययन आदतें व श्रेष्ठ समायोजन के क्षेत्रों को विकसित किया जा सकता है।

दिव्यांग विद्यार्थियों में अनन्त संभावनाएं शक्ति, सामर्थ्य, क्षतिपूरक के रूप में विद्यमान रहती है। उनके समुचित उपयोग हेतु आवश्यक है कि जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रगति हेतु देश के भावी कर्णधारों को उनके 'स्व' से अवगम कराना होगा, ताकि वे सामर्थ्यनुसार उन्हें प्राप्त करने के लिए कृत संकल्पित हों, वे सुसमायोजित हों, ताकि उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण व संतुलित विकास हो। दिव्यांग विद्यार्थी भी उत्तम अध्ययन आदतों को विकसित कर श्रेष्ठ समायोजन की दिशा में अग्रसर हों और सामान्य विद्यार्थियों के साथ समाकलन के परिणामस्वरूप समाज में एक सामान्य नागरिक के रूप में सहज जीवन यापन में सामाजिक कुशलता गृहण कर सकें। यह तभी संभव है, जब हम दिव्यांग विद्यार्थियों की आदतों एवं समायोजन के स्तर से परिचित हों।

अतः शोध से सम्बन्धित निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु राजकीय, निजी एवं दिव्यांग विद्यालयों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों से अध्ययन आदतों एवं समायोजन से सम्बन्धित मापनी भरवाकर उनके सांख्यिकीय विधियों द्वारा परिणाम ज्ञात किये गये। इन परिणामों के आधार पर यह अवलोकित किया गया कि उद्देश्यों की पूर्ति में कहाँ तक सफलता मिली है। जो इस अध्ययन का मुख्य आधार कही जा सकती है।

2 समस्या कथन–

किसी भी अनुसंधान कार्य के लिए समस्या कथन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अतः शोधकर्त्री ने समस्या का चयन इस प्रकार किया है–

''माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं समायोजन का अध्ययन।'' (*"A study of study habit and adjustment in handicapped students at secondary level")*

3 शोध के उद्देश्य–

किसी भी कार्य की सफलता उसके निर्धारित किये गये उद्देश्यों पर बहुत निर्भर करती है। उद्देश्यों का निर्धारण ही कार्य को गति व दिशा प्रदान करता है। उद्देश्यों की स्पष्टता अनुसंधान को सरल एवं सहज बना देती है।

शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्न उद्देश्य निर्धारित किए है–

1. माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों का सामान्य विद्यार्थियों के साथ अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों का सामान्य विद्यार्थियों के साथ समायोजन का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्र व छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन के स्तर का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्र व छात्राओं के सामाजिक समायोजन के स्तर का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्र व छात्राओं के शैक्षिक समायोजन के स्तर का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर पर विशिष्ट विद्यालय में अध्ययनरत् दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. माध्यमिक स्तर पर विशिष्ट विद्यालय में अध्ययनरत् दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के स्तर का तुलनात्मक रूप से अध्ययन करना।

4 शोध परिकल्पना–

अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पनाएँ–

1. माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों व सामान्य विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. माध्यमिक स्तर पर विशिष्ट विद्यालय में अध्ययनरत् दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

7. माध्यमिक स्तर पर विशिष्ट विद्यालय में अध्ययनरत् दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5 अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्द–

6अनुसंधान की विधि–

प्रस्तुत शोध की समस्या को भली भाँति समझकर अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन करके प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। जो कि सम्बन्धित अध्ययन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विधि है। सर्वेक्षण विधि वह विधि है, जो लक्ष्य तक पहुँचने में नीति–निर्धारण, आँकड़ों का संकलन, उनकी वैद्यता व विश्वसनीयता ज्ञात करने एवं भावी शोध के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है।

7अध्ययन के चर–

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रयुक्त चर अग्रांकित है–

8 प्रदत्तों के स्त्रोत–

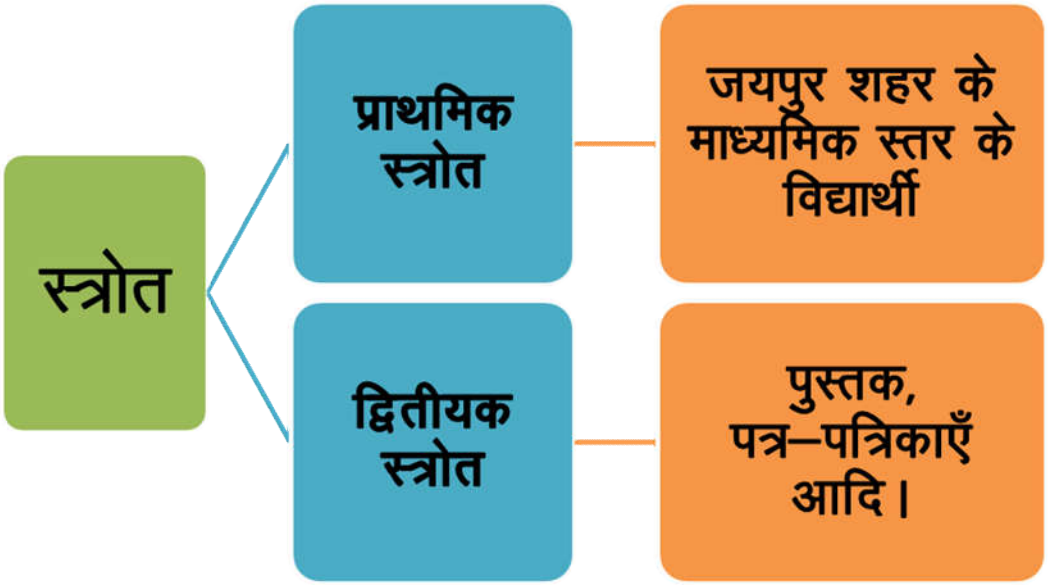

9प्रदत्तों की प्रकृति–

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक व गुणात्मक प्रकार की है।

10 जनसंख्या–

जयपुर शहर में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के सामान्य के साथ दिव्यांग विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

11 न्यादर्श–

''प्रतिदर्श जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि विस्तृत समूह का छोटा प्रतिनिधि है।''

––गुड एवं हैट के अनुसार

प्रस्तुत शोध में साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है।

सारणी संख्या–1

विद्यालय	विद्यार्थी	संख्या	योग
राजकीय विद्यालय	सामान्य	15	30
	दिव्यांग	15	
निजी विद्यालय	सामान्य	15	30

	दिव्यांग	15	
दिव्यांग विद्यालय	दिव्यांग छात्र	20	40
	दिव्यांग छात्राएँ	20	

12अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति हेतु निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया–

मानकीकृत उपकरण के रूप में–

i. **अध्ययन आदतों हेतु**– एम. मुखोपाध्याय एवं डी.एन. सनसनवाल द्वारा निर्मित अध्ययन सम्बन्धी आदतों का टेस्ट।

ii. **समायोजन सूची**– ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन सूची।

13अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी–

सांख्यिकी अनुसंधान का आधार है। अतः सांख्यिकी की आवश्यकता आँकड़ों के संकलन में भी होती है। अनुसंधान प्रक्रिया में प्राप्त आँकड़ों के प्रस्तुतीकरण तथा व्यवस्थापन के पश्चात विभिन्न सांख्यिकी मानों की गणना की आवश्यकता पड़ती है। प्रस्तुत अध्ययन की सांख्यिकी निम्नानुसार है–

i. **मध्यमान**

ii. **प्रमाप विचलन**

iii. **'टी'– परीक्षण**

14 परिसीमांकन–

1. **क्षेत्र**– प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर शहर के राजकीय, निजी व दिव्यांग विद्यालयों को सम्मिलित किया गया।
2. **स्तर**– प्रस्तुत अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर के सामान्य के साथ दिव्यांग विद्यार्थियों को ही लिया जायेगा, जो 9वी/10वीं में अध्ययनरत् है।
3. **लिंग**– यह अध्ययन छात्र व छात्राओं दोनों पर किया गया।

4. **विद्या**र्थी–समय की सीमितता तथा उपलब्ध साधनों के आधार पर प्रस्तुत शोध अध्ययन में 100 विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया।
5. यह अध्ययन सामान्य के साथ दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं समायोजन से संबंधित है।
6. विशिष्ट विद्यालय में अध्ययनरत् दृष्टिहीन व मानसिक रूप से दिव्यांग विद्यार्थियों पर यह अध्ययन नहीं किया गया है।

15 सम्बन्धित साहित्यों का सर्वेक्षण :–

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को शोध अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है। अतः अनुसंधान हेतु उपयोगी होने के कारण प्रस्तुत अनुसंधान में सम्बन्धित साहित्यों का सर्वेक्षण किया गया है।

16 शोध परिणाम एवं निष्कर्ष :–

परिकल्पना–1''माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों व सामान्य विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

परिकल्पना संख्या 1 में माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 140.3 एवं 14 6 प्राप्त हुए, जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 18.72 एवं 19.36 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी–अनुपात का मान 1.11 प्राप्त हुआ है। $df = 58$ व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त टी–मूल्य 2.00 है। गणना से प्राप्त मान 1.11 सारणी से प्राप्त मान 2.00 से कम है। अतः शोध कार्य हेतु पूर्व रचित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः दोनों समूह अध्ययन आदतों के बिन्दुओं पर लगभग समानता रखते हैं, परन्तु दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा सामान्य विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें कुछ उच्च स्तर की है इसका कारण पारिवारिक वातावरण व विद्यालयी वातावरण उपस्थित

भिन्नता हो सकती है क्योंकि दिव्यांग विद्यार्थियों व सामान्य विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ एक जैसी होती है किन्तु उन्हें संतुष्ट करने के उपाय अलग अलग होते है। यदि दिव्यांग बालक सामान्य विद्यालयों की अपेक्षा विशिष्ट विद्यालय में अध्ययनरत् रहे तो दिव्यांग बालकों की अध्ययन आदतें ज्यादा बेहतर हो सकती है।

परिकल्पना–2''माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों व सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

परिकल्पना संख्या 2 में माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 8.5 एवं 7.5 प्राप्त हुए, जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 1.18 एवं 1.68 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी–अनुपात का मान 2.75 प्राप्त हुआ है। $df = 58$ व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त टी–मूल्य 0.05 है। गणना से प्राप्त मान 2.75 सारणी से प्राप्त मान 2.00 से अधिक है। अतः शोध कार्य हेतु पूर्व रचित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन के स्तर में सार्थक अन्तर है। अतः दिव्यांग विद्यार्थियों की तुलना में सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का स्तर उच्च पाया गया। इसका कारण दिव्यांग विद्यार्थियों की शारीरिक अक्षमता के कारण उत्पन्न हीनता की भावना हो सकती है। अपनी शारीरिक अक्षमता के कारण दिव्यांग बालक सामान्य बालकों की तुलना में संकोची स्वभाव तनावग्रस्त, एवं कुण्ठित हो सकते है। जिसके फलस्वरूप उनके व्यक्तित्व में असमायोजन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। शिक्षा के समुचित प्रबंधन द्वारा सही दिशा निर्देश देकर दिव्यांग विद्यार्थियों को सुसमायोजित किया जा सकता है।

परिकल्पना–3''माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

परिकल्पना संख्या 3 में माध्यमिक स्तर के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 3.7 एवं 4 प्राप्त

हुए, जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 1.28 एवं 1.32 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी–अनुपात का मान 0.95 प्राप्त हुआ है। $df = 68$ व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त टी–मूल्य 2.00 है। गणना से प्राप्त मान 0.95 सारणी से प्राप्त मान 2.00 से कम है। अतः शोध कार्य हेतु पूर्व रचित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्र एवं दिव्यांग छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः दोनों समूह समायोजन के आयाम संवेगात्मक समायोजन के स्तर पर समानता रखते है। इसका कारण यह हो सकता है कि दिव्यांग छात्र एवं छात्राएँ दोनों एक जैसी परिस्थिति एवं वातावरण में अध्ययनरत् है जिससे कि वह अपने संवेगों को उचित समय पर, उचित रूप में अभिव्यक्त कर पाते है। एवं उन पर नियंत्रण रख पाते है। अतः यही कारण हो सकता है कि दोनों के संवेगात्मक समयोजन के स्तर में समानता परिलक्षित हुई।

परिकल्पना–4''माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

परिकल्पना संख्या 4 में माध्यमिक स्तर के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 3.6 एवं 4 प्राप्त हुए हैं, जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 1.12 एवं 1.26 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी–अनुपात का मान 1.42 प्राप्त हुआ है। $df = 68$ व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त टी–मूल्य 2.00 है। गणना से प्राप्त मान 1.42 सारणी से प्राप्त मान 2.00 से कम है। अतः शोध कार्य हेतु पूर्व रचित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्र एवं दिव्यांग छात्राओं के सामाजिक समायोजन के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः दोनों समूह संवेगात्मक समायोजन के बिन्दु पर समानता रखते है। इसका कारण दिव्याग छात्र एवं छात्राओं को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में समानता

हो सकती है एवं सामाजिक दृष्टि से उनकी रूचियों व अभिरूचियों में संतुलन हो सकता है। जिसके फलस्वरूप इनके सामाजिक समायोजन में समानता दिखाई दी।

परिकल्पना–5''माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

परिकल्पना संख्या 5 में माध्यमिक स्तर के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 4.2 एवं 4.4 प्राप्त हुए, जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 1.00 एवं 1.39 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी–अनुपात का मान 0.68 प्राप्त हुआ है। $df = 68$ व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त टी–मूल्य 2.00 है। गणना से प्राप्त मान 0.68 सारणी से प्राप्त मान 2.00 से कम है। अतः शोध कार्य हेतु पूर्व रचित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः दोनों समूह शैक्षिक समायोजन के बिन्दु पर समानता रखते है। इसका कारण दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के प्रति शिक्षकों के व्यवहार में समानता, विद्यालय प्रशासन, वातावरण, पाठ्यक्रम व अन्य कार्यक्रमों का समान रूप से आयोजन हो सकता है। जिसके फलस्वरूप उनकी शैक्षिक सह–शैक्षिक समायोजन में समानता परिलक्षित हुई।

परिकल्पना–6''माध्यमिक स्तर पर विशिष्ट विद्यालय में अध्ययनरत दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

परिकल्पना संख्या 6 में माध्यमिक स्तर के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं की अध्ययनत आदतों से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 125 एवं 128 प्राप्त हुए है, जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 6.05 एवं 58 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी–अनुपात का मान 1.59 प्राप्त हुआ है। $df = 38$ व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त टी–मूल्य 2.02 है। गणना से प्राप्त मान 1.59 सारणी से प्राप्त मान

2.02 से कम है। अतः शोध कार्य हेतु पूर्व रचित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर विशिष्ट विद्यालय में अध्ययनरत् दिव्यांग छात्र एवं छात्राएँ की अध्ययन आदतों के बिन्दुओं पर लगभग समानता रखते है। इसका कारण यह हो सकता है कि दिव्यांग छात्र एवं छात्राएँ दोनों एक जैसी परिस्थिति एवं वातावरण में में अध्ययरत है एवं उनकी अध्ययन आदतों को एक समान रूप से विकसित किया जा रहा है। इसलिये उनकी अध्ययन आदतों में समानता परिलक्षित हुई।

परिकल्पना–7''माध्यमिक स्तर पर विशिष्ट विद्यालय में अध्ययनरत दिव्यांग छात्र–छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

परिकल्पना संख्या 7 में माध्यमिक स्तर के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 9 एवं 10 प्राप्त हुए, जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 1.48 एवं 2 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी–अनुपात का मान 1.75 प्राप्त हुआ है। $df = 38$ व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त टी–मूल्य 2.02 है। गणना से प्राप्त मान 1.75 सारणी से प्राप्त मान 2.02 से कम है। अतः शोध कार्य हेतु पूर्व रचित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर विशिष्ट विद्यालय में अध्ययनरत् दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः दोनों समूह समायोजन के बिन्दु पर समानता रखते है। इसका कारण यह हो सकता है कि दिव्यांग छात्र एवं छात्राएँ एक जैसी परिस्थिति एवं वातावरण के सम्पर्क में रहने के कारण उनके व्यक्तित्व में हीनता की भावना नहीं पनप पायी। जिसके फलस्वरूप वह अपने वातावरण में स्वतः ही समायोजित हो गये।

17 शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ :–

प्रस्तुत शोधकार्य माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं समायोजन के स्तर को जानने का एक लघु प्रयास है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणाम विभिन्न प्रकार की समस्याओं को हल करने मे सहायक होते है। ये परिणाम शिक्षा नीतियों को भी प्रभावित करते है अतः परिणामो के माध्यम से ही शिक्षा तकनीकी एवं प्रविधियों में सुधार कर शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है, और बालको के स्तर को भी उन्नत किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध दिव्यांग विद्यार्थियों के माता पिता को सचेत करने में सहायक हो सकेगा कि समायोजन सफलता की कुंजी है। यह भावना विकसित होने पर प्रस्तुत शोध समाज को समायोजित व्यक्ति प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा। यह शोध शिक्षकों को प्रेरित कर सकेगा कि वे स्वयं के तथा विद्यार्थियों के समायोजन में वृद्धि कर सके।

दिव्यांग विद्यार्थियों के स्वस्थ समायोजन व आत्मविश्वास के महत्व के सम्बन्ध में माता पिता एवं अध्यापकों में जागरूकता लायी जा सकती है।

स्वस्थ्य समायोजन के विकास व अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए अध्ययन आदतें श्रेष्ठ सिद्ध हो सकेगी।

शिक्षा ही मानव जीवन को सफल बनाती है। आज के युग मे प्रत्येक विद्यार्थी उन्नति करना चाहता है। शिक्षा ही व्यक्ति को उन्नतिशील बनाने में सहायक होती है। सभ्यता और संस्कृति के पथ पर चढ़ता हुआ युवक शिक्षा की सहायता से ही आगे बढ़ता है और जीवन के हर क्षेत्र में स्वयं को सुसमायोजित कर सकता है।
शिक्षा के महत्व एवं उपयोगता को देखते हुए प्रस्तुत शोधकार्य शैक्षिक दृष्टि से निम्न आधारों पर उपयोगी साबित होगा–

- शिक्षा में शैक्षिक नवाचारों के प्रयोग की सार्थकता को बढ़ाना।
- दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आंदतो के निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति किस स्तर तक हुई है यह बताने के लिए।
- दिव्यांग विद्यार्थियों के समायोजन के स्तर को बताने के लिए साथ ही शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर को बढ़ाने आदि आधारों पर यह शोधकार्य शिक्षा में उपयोगी होगा।

18 भावी अनुसंधान हेतु सुझाव :–

कोई भी शोधकार्य अपने आप में सम्पूर्णता लिये नही हो सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य भी दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों एवं समायोजन के स्तर को जानने का एक लघु प्रयास है। भावी शोधकर्त्ता इस सम्बन्ध में अध्ययन के लिए निम्नलिखित तथ्यो पर गौर कर सकते है–

1. प्रस्तुत शोधकार्य माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों तक ही सीमित है। जबकि यह शोधकार्य उच्च माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श 100 लिया गया है। जबकि भावी शोधकार्य विस्त्रित न्यादर्श लेकर किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोधकार्य दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं समायोंजन से सम्बन्धित है। जबकि शैक्षिक उपलब्धि एवं रूचि परीक्षण आदि पर शोध किया जा सकता है।
4. उपलब्धि स्तर की बौद्धिक योग्यता से तुलना की जा सकती है।
5. भावी शोधकार्य विशिष्ट विद्यालय में अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों को प्रभावित करने वाले कारकों पर भी किया जा सकता है।
6. माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
7. दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
8. दिव्यांग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों का अध्ययन पर भावी शोध कार्य किया जा सकता है।

19 उपसंहार–

प्रस्तुत शोधकार्य दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं समायोजन से सम्बन्धित है। दिव्यांग बालक भी देश के लिए मूल्यवान मानव संसाधन होते है। आधुनिक युग प्रतियोगिता का युग है। तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिव्यांग बालको को भी सामान्य बालको की तरह उच्च उपलब्धियों की आवश्यकता है।

यद्यपि दिव्यांग विद्यार्थियों की आवश्यकताएं भी सामान्य विद्यार्थियो के समान ही होती हैं। किन्तु उनको संतुष्ट करने के उपाय सीमित होते है। दिव्यांग बालको को उचित मार्गदर्शन व प्रोत्साहन के द्वारा शिक्षा के समुचित प्रबंधन द्वारा सही दिशा निर्देश देकर उनकी अध्ययन आदतों को श्रेष्ठ बनाकर उनकी शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को बढाया जा सकता है। उपलब्धि के विकास से उनका समायोजन भी सुदृढ़ हो सकेगा। हाल ही के वर्षो में दिव्यांगो के प्रति समाज का नजरिया तेजी से बदला है। अतः वह दिन दूर नही जब दिव्यांग बालक भी सामान्य बालकों की तरह राष्ट्र की उन्नति का कर्णधार बनकर अपने स्वजीवन को सफल बनाकर समाज में एक सामान्य नागरिक के रूप सहज जीवन यापन में कुशलता ग्रहण कर सकेंगे।

प्रस्तुत शोध कार्य में दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं समायोजन का स्तर सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्नतर पाया गया। इसी बात को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री कुछ सुझाव प्रेषित कर रही है। यदि उन्हे ध्यान में रखा जाये तो निश्चित ही दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आंदतों एवं समायोजन के स्तर में वृद्धि हो सकेगी –

1. विद्यार्थियों को चाहे वह दिव्यांग ही क्यो ना हो उन्हे अपना ध्यान शिक्षा की तरफ मोड़ लेना चाहिए और श्रेष्ठ अध्ययन आंदतों का निर्माण करें जिससे उपलब्धि के विकास से उनका समायोजन सुदृढ होगा।
2. प्रत्येक दिव्यांग विद्यार्थी को चाहे वह किसी भी श्रेणी का हो उसे अध्ययन के प्रति लगनशील रहना चाहिए। साथ ही विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का विद्यालय द्वारा विकास किया जाना शिक्षा जगत एवं विकास के लिए उपयुक्त है।
3. ऐसे कार्यक्रम विद्यालय में आयोजित किए जाये जिससे दिव्यांग बच्चों को अग्रणी बनाकर कार्य कराया जाये जिससे समायोजन के साथ–साथ अन्य उपलब्धियां भी विकसित होगी।
4. शैक्षिक विकास व समायोजन के लिए परामर्श दिया जाये तथा आवश्यकता पड़ने पर सहानभूति पूर्वक वातावरण द्वारा व्यवहार प्रदर्शित किया जाये।

5. कम समायोजित दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त अथवा निदानात्मक कक्षाएँ आयोजित की जानी चाहिए ताकि वे छात्र जो उपलब्धि की कमी के कारण हीनता का अनुभव करते है उसे दूर किया जा सके।
6. दिव्यांग विद्यार्थियों को अध्ययन करते समय एकाग्रता पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
7. दिव्यांग विद्यार्थियों द्वारा अपनी समस्याओं का समाधान करने हेतु अध्यापको से विचार विमर्श करने में कभी संकोच नहीं करना चाहिए।
8. दिव्यांग विद्यार्थियों द्वारा ऐसी डायरी का निर्माण किया जाना चाहिए जिसमें समायोजन को बढाने हेतु विभिन्न लेखों का संग्रहण हो ताकि उनके समायोजन में वृद्धि हो सके।
9. दिव्यांग विद्यार्थियों को नियमित अध्ययन करना और अनुशासन का पालन करना भी अनिवार्य है।
10. विद्यालय में होने वाली पाठ्यसहगामी क्रियाओं मे बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए जिससे समायोजन में वृद्धि होगी तथा स्वयं के ज्ञान का चहुमुखी विकास होगा।